तुम क्या हो ?

शरीर जात ही एक कोशिका

उन्मत्त हो उठी है जो

विद्रोह से भर गया है चित्त।

कभी सोचा ?

उन्माद जन्य अनियंत्रित अभिवृद्धि

अंततः विनाश लक्ष्या बन जाती है।

पराश्रित होकर भी बनते तुम शक्तियुत

उत्पीड़क आश्रय के महान।

उत्पन्न करते हो मात्र पीड़ा क्षीणता और क्षय

है कुछ आश्रयेतर तुम्हारा अस्तित्व ?

फ़िर भी यह शक्तिमद यह भय जनन

रहते हो छिपे कायरवत

जब तक न होते बलांवित

शक्ति अर्जन तुम्हारा

अंततः बनता महा आपदाकारी

अलक्षित प्रारम्भ में रहती तुम्हारी नाश ऊर्जा

मात्र निज पोषण निरत

पीते निजाश्रय का सतत जीवन सत्व

सतत परजीवी न क्या जग में घृणित है ?

तुम्हारी वृद्धि में ही निहित हैं

क्षय के भयावह बीज

नहीं तुम मात्र कर्कट

रक्तबीजोपम विचरते हो धरा पर।

वह हंसा, हम हैं नव्य महाभेष

देहज भी हैं और आगंतुक भी

एक ही धर्म है हमारा

सर्वथा स्वपोषण

हमें अनुमत हैं हिंसा पीड़न शोषण और मोषण

स्ववर्धन मात्र है मम मंत्र

साहस कर पूछा मैंने हे महाभेष निजाश्रय शोषण कितने दिन चलेगा

अंत में होगा देह पात तब तुम भी तो नहीं रहोगे।

वह हंसा। मै नव्य महाभेष हूं, नवीन आश्रय खोज लेता हूं।

मैं सतत वर्धनशील यही है शक्ति मेरी।

स्वपोषण जगत में क्या पाप है ?

हां है। यदि आश्रय विनाश ही इसकी परिणति हो।

दिनांक : 10/05/2020

कानपुर

पं. शिव कुमार मिश्र